तेसर अङ्क

[स्थान धर्मनिवास, धर्म बैसल दृष्ट होइत छथि]

[सन्तोषक प्रवेश]

सन्तोष– (स्वगत) आब त दिन दिन हमर दशा क्षीणे भेल जाइछ । कोनहुँ रूपेँ देशमे हमरा रहै नहि देत । जाहि ठाम क्षीणो हमर स्वरूप जे क्यो देखैत छथि से हुनका भ्रम थिकन्हि, ओ स्वरूप महा छली आलस्यक थिकैक । मिथ्या हमरा नामेँ समाजकेँ परतारि रहल अछि । तैँ ई सब विषय एक बेरि धर्म सँ निवेदन कै पड़ाइए जाइ से नीक (**कहैत धर्मक समीप जाए धर्मकेँ नमस्कार कै**) महाराज ! एहि ठामसँ आज हमर निष्कासन होइछ । परन्तु हम त अपनेक अधीन छी तैँ निवेदन करै ऐलहुँ ।

धर्म– अरे की ? अहाँक निष्कासन ? अहाँक गेने हमर जे दशा होएत से बुझले अछि । किऐक, कोना निष्कासन होइछ से त कहू ।

सन्तोष– की कहू ! (**कहि, चारू दिशि तकैत छथि**)

धर्म– अकचकाइत छी किऐक ?

सन्तोष– क्यौ दुष्ट कोनहुँ रूपेँ आएल ने हो ई भय बनले रहैत अछि । बेस, सुनल जाओ, क्रूर कलिकालक डरेँ विदेहक राजधानी परम पवित्र तथा निरापद स्थान जानि अपनेक सङ्ग–सङ्ग विद्याविवेकादिसहित हमरा सबहि एहि ठाम नुकैलहुँ । तैओ ओकर अनुचर खेहारनहि आएल । देखू, एहि देशमे सब अपन कर्म–धर्ममे एकान्त निष्ठा राखि हमरे उपासक छलाह । परन्तु आब त हुनका सबहिकेँ लोभ परतारि तेहन अपनौलक जे हमरा दिशि दृष्टिपातहुमे घृणा करैत छथि । हमरहि सङ्ग विचार–आचार इत्यादिक अवहेलो करैत छथि । देखू, ओहि क्रूर कलिक प्रपञ्च –

सन्तोषक छवि आलस लेल । सब जन तनिक वश्य भै गेल ॥
क्रोध धैल पुरुषार्थी रूप । प्रकट क्रिया कर तसु अनुरूप ॥

पिशुन तथ्यज्ञानी बनु बेश । छल प्रपञ्च भल साधुक वेष ।।
ईर्ष्या खल विधवा छवि धारि । कलि मत साधै युक्ति बिचारि ।।

धर्म– ई सब त हमरा ज्ञाते अछि । एही दुःखें हम दिनानुदिन क्षीण भेल जाइत छी ! हा ! कालवशें हम पङ्गु भेलापर परमपुनीत महाराज जनकक राजधानी ओ सीताक जन्मभूमि मिथिलहिकाँ सुखद स्थान मानि आश्रय लेल ओ ताहीसँ एहू अवस्थामे चित्त शान्त रहैत छल वा एतबा दिन ई स्थानो निरापदं बुझना जाइत छल । आब त अहाँ सबहिक अपमानें तथा एहन कलिक प्रपञ्चें हमर कोन दशा होएत से नहि कहि । (**चुप्प भै**) की करू, एखनहुँ एहिसँ उत्तम हमरा हेतु दोसर कोनो स्थानो दृष्ट नहि होइछ । द्वितीय, पङ्गु, भै कोना कतै जएब ? हा जगदम्ब !

जे भुवि भवभयमोचनी, सीता प्रकटित कैल ।
से पवित्र भूमिक मनुज, किऐ कुमारग धैल।।

सन्तोष– हमरा अबलम्बैं जँ देशान्तर जैबाक इच्छा हो तँ चलू, हम कान्ह चढ़ाए लै जाएब ।

धर्म– अहाँ सबहिक तँ अबलम्बे अछि परन्तु हमरा तँ आब मिथिलासँ भिन्न स्थानमे एतबौ सुखी रहबाक सम्भव नहि । अहाँ कतै जाएब ? एही देशमे कतहु गुप्तरूपैं रहि काल बिताउ ।

सन्तोष– से आब बड़ असह्य–

लोभ लालसा नासल लाज । लोक लीन अछि लम्पट काज ।।
की मर्यादा की कुलरीति । मेटल सकल शास्त्रश्रुतिनीति ।।

(नेपथ्यमे)

देखू त, हरिया ककरासँ गप्प करैत पछुआए गेल । बेस, त ता अगिला गाछक छाहरिमे बैसैत छी ।

सन्तोष– बाप रे बाप ! हम पड़ाइत छी !

धर्म– से किऐक ?

सन्तोष– सुनल ने ? ओहो हमर गरदनियाँ देनिहार थिकाह (**कहैत पड़ैबाक उद्योग करैत छथि**) ।

धर्म– अरे ! के थिकाह, के थिकाह ।

सन्तोष– ई महात्मा बिकौआ थिकाह जे आन देशक देखाउसिमे पड़ि हमर नाश कैलन्हि (**कहि पड़ाइत छथि**) ।

धर्म– वास्तवमे ई केवल ओकरे नाशकारी नहि थिकाह; हमरहु आघाते करैत छथि। हा ! हम आब परम पवित्र मिथिलाहुमे असहाय भै खिन्न होबैं चाहैत छी । (**चुप्प भै**) कतै जाउ, कोना आउ, की करू ? (**चुप्प भै**) बेस, एखन श्रीमान् मिथिलानरेशक विद्वत्परिषद्भवनहिक आश्रय कै दुर्दिन कै बिताबी सैह नीक वा ओहि ठाम रहब निरापदो होएत । एहि दुष्टाक्रमणक निरोध कैल जाएत (**कहैत घुसकैत जाइत छथि**) ।

[विष्कुम्भक]

[परदा उठैत अछि, एक मैथिल बैसल दृष्ट होइत छथि]

[एक दिशसँ एक भृत्यक प्रवेश]

व्यक्ति– हरिया ! विलम्ब किऐक भेलौक ?

हरिया– रास्ता मे निचैनपट्टीक मोहनखबाससँ भेट भेल । ओकरहिसँ बतिआए लगलिऐक ।

व्यक्ति– ओकर चर्च्चा हमरा लग जनु कर ।

हरिया– तकरे त फलो होइत छन्हि ।

व्यक्ति– से की ।

[दोसर दिशसँ दोसर व्यक्तिक प्रवेश]

आगन्तुक– (प्रथम व्यक्तिसँ) ज्ञानदत्त भाइ । गोड़ लगैत छी । (कहि प्रणाम करैत छथि) ।

ज्ञानदत्त– निकै रहह निकै रहह, बबुअन ! तोँ कहाँ सँ हौ ?

बबुअन– हमरा सबहि त सब दिन गामहि रहैत छी । अहाँ के कोना गाम मन पड़ल ?

मन किऐक पड़त ? सब ठाम सब दिन नौ–तिमने, तखन गाम कथी लै आएब।

ज्ञानदत्त– हौ जी !

तोहरा सबकैं खेत पथार । हमरा तौं सगरे संसार ।।
धनि धनि हरिसिंहदेवक रीति । नित नव भोजन महुअक गीत ।।

बबुअन– औ भाइ ! से तँ साँचे परन्तु–

जे जन कैल जमाय बिकौआ तनिक मान धान नाश ।
दुरवचनहि आदर हो तनिका, सब खन चितमे त्रास ।।

ज्ञानदत्त– अरे ! ई कोनो बुड़िआहाक बनाओल थिक, नहिँ त

जे जन कैल जमाय बिकौआ सैह यशी धनवान ।
हरिसिंहदेवक नीति निबाहक हुनकहि अछि किछु ज्ञान ।।

बबुअन– औ भाइ ! देखैत छी लाले धोती । की फेरि कतहु ?

ज्ञानदत्त– (मुसुकाइत) हे हौ । एहू शुद्धमे एक गोट भावी छलैक, से भै गेलैक।

बबुअन– औ भाइ ! आब अहूँ बढ़बै लगलिऐक ।

ज्ञानदत्त– हम नहिँ बढ़ाएब वा आब एकर मर्यादा कतै ।

बबुअन– निचैनपट्टीक त आब चर्चो नहि । आदमी ओहि ठामक बौआएल फिरैत अछि।

ज्ञानदत्त– ओकर चर्चा हमरा ओतै छाड़ि दैह । आन गप्प करह ।

बबुअन– की भेल से तँ कहू ।

ज्ञानदत्त– (उदास भै) होएत की ।

बबुअन– खाएक, प्युक, बिदाइ सिदाइमे ठकठेना भेल का ?

ज्ञानदत्त– अरे ! तकरा के पुछै, फड़कहुक टाका आइधरि बाँकिये ।

बबुअन– जे टाका बन्हने आदमी आएल छल ?

ज्ञानदत्त– राखथु अपन टाका ।

बबुअन– अरे ! एक बेरि जाए टाका त लै आउ, से क्यौ छोड़ै ।

ज्ञानदत्त– ओकर चर्चा छाड़ि देह ।

बबुअन– भाइ ! खिसिआइ जनु ! एहने एहन सब देशक प्रतिष्ठा नाश कैलन्हि ।

ज्ञानदत्त– से की ?

बबुअन– अन्यदेशी सब एहि प्रसङ्गक कथा चलाए कुचेष्टा करैछ । तखन, लज्जित होबै पड़ैछ ।

ज्ञानदत्त– से की कहतहु । देखह, बङ्गालीमे कुलीन सब एही तरहैं कैएक विवाह करैत छथि, टको पूर्ण पबैत छथि, सम्मानक त कथै कोन । बुझै ने छहक, सबहिक एके दशा, ई कथा जनैत नहि छह ? "ऊँचा चढ़ि कै देखा, घर घर एके लेखा ।"

बबुअन– (**स्वगत**) यैह देखू, बङ्गालीमे ई व्यवहार अछि, तकरे देखउसि हमरा देशमे परसरल । हा दैव ! एक दिन ई मिथिला तेहन छल जे एकर नीकक देखाउसि अन्य देशवासी करैत छल । आब एहन दिन भेल जे आनक अनाचारक देखाउसि एहि देशमे होइछ ।

ज्ञानदत्त– जाह जाह, मर्यादा धोए धोए चाटह ग । देखितहि छह, गाममे जे पढ़ने छथुन्हि तनिक दशा सैह जे भोजनहुँमे सन्देह । हम त सब काल पाने आड़ाँची चिबबैत छी ।

बबुअन– ओ भाइ !

जे सन्तोष–सिद्ध भै जगमे भुखलो दिवस बिताबथि ।
कै अविचार सुखी जे जन छथि तुलना तनिक कि पाबथि ।।

ज्ञानदत्त– आब से दिन गेलैक । परन्तु तोहरा कटौटीमे के पड़ौ । कहह जे ऐलाह अछि कहाँसँ ?

बबुअन– से की कहू, गाममे गोलैशिये भै रहल अछि । अहाँ भल अंवसरमे ऐलहुँ । काल्हि फौजदारी होबै पर छैक । तकरे विचार करै गेल छलहुँ, दुनू गोल बेहरी कै रहल अछि ।

ज्ञानदत्त– से कथी लै हौ ?

बबुअन– से जनु पुछी । गामहि गेने बुझब ।

ज्ञानदत्त– अरे । किछु कहह त ।

बबुअन– बबुआभाइ काशीसँ आबि चौपाड़ि बन्हलन्हि की काल बन्हलन्हि । नव चौपाड़ि पर विद्यार्थीओ बहुत आएल परन्तु पुरना चौपाड़िक विद्यार्थीसँ शास्त्रर्थ भेलैक । ताहि पर दुनू विद्यार्थीक दल अपनामे काटाउझि करैत करैत पछाति गुरुअहुकैं हथिऔलक । तखन जैह नहि होएबाक सैह । और कैएक तरहक ईर्ष्या अपनामे छलैक, बस ।

ज्ञानदत्त– तखन त भल अवसरमे ऐलहुँ । बेस, तावत् रौद खसैत छैक, तखन चलब । हौ बबुअन ! बहुत दिनसँ तोँ नहि किछु सुनौलह अछि ।

बबुअन– एखन किछु नीक लगैत अछि ? सब खन चिन्तिते रहैत छी ।

ज्ञानदत्त– अरे ! चिन्ता कथिक हौ । ओहू गोलबैयाक डरे ? कोनो डर नहि ; चलह जे होए से होओ, आधा खर्च हमरे ।

बबुअन– औ भाइ ! अहीं सबहिक त भरोस ।

ज्ञानदत्त– बेस बेस, तावत् किछु गाबह त ।

बबुअन– बेस, सुनू–

हाय ! एहन भेल मिथिलादेश ।
बाढ़ल वाद छुटल कुल मारग, दिनदिन अधिक कलेश
अनदेशी सहजहि धन लूटल, लागल जन मन ठेस ।
विद्यानीति कलाकौशलरुचि ककरहु नहि लवलेश ॥
जे किछु पढ़थि रटथि शुकहिक सम बूझथि नहि उपदेश ॥
निजरुचि नव नव मारग रचि रचि करइत छथि नव वेश ।
ईर्ष्यहि रघुनन्दन सब मातल के बुझ नृपति–निदेश ॥

(नेपथ्यमे)

रे । के तोँ ? हमरहि घरमे मिथ्या हमरा सन्तानक निन्दा करैत छेँ ? एक बेरि देखू त के थिक । जैओ एहिसँ ओकरा हृदयमे भक्तिए बुझना जाइछ तैओ देखबाक थिक जे क्यौ छली छल त ने करैत अछि; किऐक त एहि कलिक कार्यकर्त्ता सब कतेक गुप्त रूप बनौने हमरा नाशक हेतु घूमि रहल अछि ।

ज्ञानदत्त– (**अकचकाए**) हौ जी ! ई के बाजल ? (**कहि गाछक दिशि ताकि**) देखैत त ककरहु नहि छिऐक ।

बबुअन– औ भाइ ! एही ठाम भकरहाकैं भूत पटकने छलैक । चलू चलू; पड़ाउ (**कहि सब जाइछ**) ।

पहिल गर्भाङ्क ।

[परदा उठैत अछि । मिथिलाक प्रवेश]

मिथिला– के ई बतहा जँहि तँहि बाजि पड़ा गेल ? जतेक बाजल; सब फुसिए । भला, हमर सन्तान कतहु एहन हो ।

सकल शास्त्र पारङ्गम मैथिल, जगभरि के नहिँ जान ।
निजनिज धर्मनिरत निशि दिन सब श्रुतिपथ बुझ परमान ।।
नीतिनिपुण नृप हृदय निरन्तर परमारथ पद ध्यान ।
निर्मल यशी सुकृति भै भूतल कहु प्रगटल के आन ।।

[एकदिशसँ उदासीना सुमतिक प्रवेश]

मिथिला– सुमति । आबह । आबह, भल अवसरमे ऐलिहि । हम अपन सन्तान कैँ तोहरहि रक्षामे दै निश्चिन्त छलहुँ । आइ क्यौ बतहा हमर ओहमरा सन्तानक दुर्दशाक गीत गबैत छल । हमरा अबितहि पड़ाए गेल । तखनसँ बड़ शोच होइछ । कहह हमर सन्तानक शुभ संवाद ।

सुमति– हमहुँ सैह कहै ऐलहुँ, आब ओ सब हमरा कहबामे नहिँ छथि ।

मिथिला– से किऐक ?

सुमति– कुमति–कुटिल दृगपात होइतहि सब मोहित भेला ।
बिसरल नीतिक बात आब हमर आदर कतै ।।

(कहि, मुह झाँपि कनैत छथि)

मिथिला– सुनू सुनू । एतेक शोक कथिक ? की भेल से त कहू ।

सुमति– कि कहब कठिन कलेशे, तुअ सुत बिसरल सत उपदेशे ।

करथि निरादर मोरे, हँसि हँसि कुमति गहथि भरि कोरे ।।

निजरुचि कर सब काजे, अनबन पसरल सकल समाजे ।

विनय करिअ कर जोरी, मोहि बिदा दिअ, मानि निहोरी ।।

मिथिला– हा ! ई आश्चर्य ! हमरा सन्तानक ई दशा किऐक ?

जे श्रुतिरीति नीति पथ चलि चलि अनकहु गमन कराबथि ।

से पुनि सुमति निदरि कुमतिहिकाँ किअ निज अङ्कम लाबथि ।।

सुमति– हम की तनिक कहब लघु करनी, सुनि बाढ़त मनताप ।

सबहि हृदय इर्ष्या निशिचारिणि थापल अपन प्रताप ।।

ऐक्य बिना पुनहि पथ सञ्चरु हम ऐलहुँ एहि लागी ।

स्वामिनि विनय बिना जौं जाएब होएब दोषक भागी ।।

रहब असह्य भेल तैं चललहुँ सुनु सुनु बुधजन–माता ।

कुमति कठोर क्रिया–फल पबइत के होएत मम त्राता ।।

(कहैत–कहैत जाइछ) ।

मिथिला– हा ! हमरा सन्तानक एकमात्र रक्षा कैनिहारि सुमति चलिए गेलि । बुझना जाइछ जे हमरा सन्तानसँ ओकरा अवश्य अपमान होबै लगलैक । (**किछु सोचि**) भला, विद्याविलासिनीमध्य अनुराग रहन्हि । तैओ कल्याणे छैन्हि ।

[एकदिशसँ विद्याक प्रवेश । मिथिलाकेँ प्रणाम कै ठाढ़ि कनैत छथि]

मिथिला– विद्या ! आइ अहाँ कैं की भेल अछि ? अहाँ हमरा सन्तानक प्राणसमा भै किऐक कनैत छी ?

विद्या– हमर से सौभाग्य नहि, सैह विनय करै ऐलहुँ ।

मिथिला– अरे ! हमरा सन्तानकेँ त एकमात्र सुखदायिनी अहाँसँ दोसर क्यो नहि ।

तखन अहाँक ई कथा असङ्गते बुझना जाइछ । किऐक त–

कण्ठमाल विद्या जनिक हुनकहिमे अति प्रेम ।
से की त्यागत ताहिकाँ जाहि अचल निज नेम ।।

विद्या– आलस सबहि लेल अपनाय । सौख्यादिकमे मन ललचाय ।
व्यर्थ विवाद पाठरुचि पाय । तनिका विद्या कतहु सोहाय ।।

मिथिला– हा ! हमर सन्तान एहने भेल जाइछ जे एकमात्र सुखदायिनी विद्याक निरादर करैछ !

विद्या– आब हमरा जेहन आज्ञा दी, से करी ।

मिथिला– किछु दिन कोनहुँ रूपैं काल बिताउ । हम हुनका सबहिक दुर्बुद्धि विनाशक यत्न अवश्ये करब ।

विद्या– जे कही (**कहि जाइत छथि**)।

[एक दिशसँ ऐक्य चुप्पहि पड़ाएल जाइत देखना जाइत छथि]

मिथिला– ऐक्य ! ऐक्य ! अरे ! चुप्पहि कतै जाइत छी ? किछु सुनिओ त लिअ ।

ऐक्य– आब की सुनब ? बहुत लतिआऔल गेलहुँ।

मिथिला– अरे ! अहाँक अनादर जे गृहस्थ करताह तनिका कोनहुँ रूपैं कल्याण नहि छन्हि । सुनू सुनू ।

मिलि पितु मातु भ्रातृ सुत आदिहुँ, पालित पूरन प्रेम ।
बसि रहि एक सङ्ग सुखसौं नित सतत निहिअ नेम ।
केवल ऐक्य अहिंक आदरसौं जग गृहस्थ सुख पाब ।
ईर्ष्यादिक दुष्टा जत भूतल तसु भय मन नहि लाब ।

ऐक्य– आब तकर अवसर नहि । आब त अहाँक सपूत सबकैं हमरहि लतिऐबामे पुरुषार्थ छन्हि ।

बेटा बाप विचार उठाओल के कह भाइक हाल ।
ईर्ष्या अपन प्रभाव देखौलक क्रोधै सबहु बेहाल ।।

धर्म्म कर्म्मकैं किछु नहि मानै नीतिरहित सब धाम ।
झगड़ा आगि रातिदिन धधकै के रह एहना ठाम ।।

मिथिला– हा ! हम एहि दिनक चिन्ता पहिनहिसँ करैत छलहुँ । से कथा सुबोध सन्तान सबहुँकाँ कहबो कैलैन्हि परन्तु देखू त दुर्दिनता ।

जनिक विद्या बुद्धि अनुपम विदित भूतल बीच ।
से कि ईर्ष्या–आदि वश भै कर्म्म कर अति नीच ।।
शान्ति सुख निशि दिन निरन्तर जतै राखथि वास ।
ततहि सौं सब मीलि सङ्गहि किऐ भेल उदास ।।

ऐक्य– आब सैह दिन भेल अछि जे–

सन्तोषक सत्कार कतहु नहि लोभी लम्पट चोर ।
बनि बनि परधन–परतिय–नेही कैलक धर्मक ओर ।।
जाति पाति मर्यादा त्यागल तेजल पूजा ध्यान ।
आब अनर्थ अधिकतर होइछ के सह ई अपमान ।।

(नेपथ्यमे)

अरे ! अहाँ लोकनि गप्पे करैत रहब कि चलबो करब ? विवेक, ज्ञान इत्यादि सबहि अगुआएल जाइत छथि ।

ऐक्य– येह हमहुँ ऐलहुँ (**कहि जाइत छथि**) ।

मिथिला– हा ! जखन येह सब उदास भै हमरा सन्तानकैं त्यागल तखन हमहिं की करब । (**चुप्प भै**) तैओ सन्तानक ममत्व नहि मानैछ । बेरि बेरि हुनका सबहिंक परिबोधक इच्छा होइतहि अछि । तैं आब हम तकरे यत्न करै जाइत छी ।

हाय ! कतै ओ बालक मोर !
जनिक सुयश नित सत्यपरायण जगभरि अछि अतिशोर ।।
जे जन आन भ्रमहुँ भ्रम पथगत तकरो होथि सहाय ।

दरसाबथि पथ अतिशय अनुपम सुयश कहल नहि जाय ॥
दुरजन काल हरल मम से सुत तैं दुरगति ई भेल ।
जे यश अरजि गेला ओ श्रम कै तकर नाश भै गेल ॥
कि कहब शोक केहन हदि अन्तर थिर नहि अछि निज ज्ञान।
के बुझि सकत हमर दुख दारुन जकरहि हो से जान ॥

(**कहैत मूर्च्छिता होइत छथि**)

[परदा खसैत अछि]



चारिम अङ्क

[एक व्यक्तिक प्रवेश]

व्यक्ति– (**स्वगत**) कलि महाराजक आज्ञानुसार दुर्मुख नामक दूत कलिसेनाक कुशलता देखै मिथिला ऐल छथि, तथापि मिथिलापर हुनक तेहन क्रोध अछि जे ओतबै काजक हेतु हमरहु पठौलन्हि । परन्तु एहि ठाम त ककरहु नहि देखैत छी ।

[दोसर दिश सँ दोसर व्यक्तिक प्रवेश]

आगन्तुक– (प्रथमसँ) के अहाँ ? दुस्साहस ? अहाँ कतै आएल छी ?

दुस्साहस– के ई दुर्म्मुख ? अरे ! जहाँ अहाँ आएल छी; तहाँ हमहुँ । परन्तु, देखैत छी त ककरहु नहि ।

दुर्म्मुख– अहाँ ककरा देखै चाहैत छी ?

दुस्साहस– कलिक सैनाकैं ।

दुर्म्मुख– (**दुस्साहक मुँह मूनि**) चुप चुप ।

दुस्साहस– (**मुँह छोड़ला पर**) से किऐक ?

दुर्म्मुख– ई मिथिला स्वाभाविक पुण्यमयी, ताहि ठाम प्रकट रूपैं काज होएब असम्भव । तैं सब काज गुप्त रूपहि होइछ । ताही हेतु सब गुप्त वेषक धारण कै रहल छथि ।

दुस्साहस– (**हँसि कै**) के कोन रूपमे छथि ?

दुर्म्मुख– (**'सन्तोषक छवि....' इत्यादि पढ़ैत छथि**)

दुस्साहस– किछु काजो भेल अछि कि व्यर्थ ई सब वेष बनौने बौआइत छथि ?

दुर्म्मुख– नहि नहि, बहुत भेल । से सब एकान्तमे कहब । आइ ईर्ष्याक सङ्ग पिशुन अपन कर्त्तव्य देखौताह, तैं हम ओम्हरहि जाइत छी ।

दुस्साहस– तखन त हमहुँ अहींक सङ्ग जाइ सैह निक (**कहि दुनू जाइत छथि**) ।

(**विष्कुम्भक**)

[परदा उठैत अछि, एक धनी व्यक्ति क्रोधान्ध एम्हर ओम्हर घुमैत दृष्ट होइत छथि ।]

क्रोधी– (**स्वगत**) कहू त भला, हमरा एहि बुढ़ापामे ई गञ्जन ? बाप छलथिन्हि से कहिओ सोझाँ सोझी उत्तरो नहि कैलथिन्हि, ई त मारै पर वृत्त ! लोक सुनै से की कहै ? (**चुप्प भै**), हम एतेक प्रजा कैं सताए टाका ककरा लै एकट्ठा कैल ? खदुकाकैं सत्यानाशकै जमींदारी ककरा लै अरजल ? हमरा परोक्षैं अछि के ?

[**एकदिशसँ एक स्त्री परदा लग ठाढ़ि भै**]

स्त्री– (**कनैत**) लिअ घर आङ्गन, हम जाइत छी (**कहि रोदन**) ।

क्रोधी– (**सुनि चुप्प भै**) अरे ! की थिक ? किछु कहबो करब की गीत गाएब ।

स्त्री– कहब की, घरक सुलाछनीक बाढ़नि–सूप के सहौ ।

क्रोधी– आइ की भेलैक अछि ।

स्त्री– होएतैक की, हुनका नैहरमे भातिजक जन्म भैलन्हि अछि, से भारमे सोनहिक माठा पठाउलि ताकथि । हम एतबै कहलियैन्हि जे बबुअहुक जन्ममे ई सब नहि भेल छल, ई नव रीतिक कोन काज । ताहि लै गारिक ओर कैलन्हि । (**चुप्प भै**) हम त नहिएँ रहब । हमरा अछिए के ? परमेश्वर से दिन कैने रहितथि तँ एकरे सबहिक गञ्जन सुनितहुँ ? (**कहि कनैत छथि**) ।

क्रोधी– बेस बेस, बुझल । बहरिअहुक सैह ताल अछि । आब जल्दी एकक एक होएत।

स्त्री– अहाँ त वर्ष दिनसँ परतारैत एलहुँ अछि । अपना की होइत अछि ? फज्झति हमर होइत अछि ।

क्रोधी– हमरा त जे होइछ से हमहि जनैत छी । बेस, आइए एकर निश्चय भै जाएत । अहाँ जाउ, कोम्हरहुसँ क्यो आबि जाएत । (**सूनि स्त्री जाइत छथि । चुप्प भै स्वगत**) नेबालाल ओ बालकृष्णकैं बजैबाक चाही (**कहि प्रकाश**)–रौ, भोलबा छैं रौ ! (**कहि सोर करैत छथि**) ।

भोलबा– (**आबि**) जी, बाबू साहेब !

क्रोधी– बालकृष्ण ओ नेबालालकैं बजाए ला ।

भोलबा– बेस, दातमनि पानि राखि कै जाइत छी ।

क्रोधी– (**खिसिआए**) बदमाश, लुच्चा कहीं के ! कहैत छिऐन्हि एखन जाए; त दातमनि पानि जुगतबैत छथि ! जाह की लगाओल चारि खराम !

भोलबा– येह जाइत छी (**कहैत जाइछ**) ।

[एक दिशसँ भोलबाक सङ्ग दूइ व्यक्ति प्रवेश] ।

भोलबा– आइ मालिक बड़ खिसिआएल छथि ।

एक व्यक्ति– ओ बालकृष्ण भाइ ! हम नहि जाएब । बुझल ने–

धनमदमत्त भाङ कर पान । ताहू पर किछु मादक आन ।।

तकरा बातक कोन ठेकान । दुर्लभ थिक जे बाँच परान ।।

बालकृष्ण– (**हँसि कै**) नेबालाल ! डेरैलाह कि ? हमरा सङ्ग कोन डर । तैं, तो उनटै बुझलह ?

धनमदमत्त भाङ जौं खाय । औरो मादक रस लपटाय ।।

रही ततहि, निज घात लगाय । अवसर पाबि काज बनि जाय ।।

नेबालाल– तैं ओ बाबू ! हुनका तामसमे के पड़ौ !

बालकृष्ण– (**कानमे किछु कहैत छथिन्हि**) ।

नेबालाल– हँ, से त अवश्य परन्तु ई काज अहींक शक्य होएत औ भाइ !

बालकृष्ण– हँ हँ ! एखन त सैह परन्तु हिस्साक बेरि बराबरि भेल ताकै ।

नेबालाल– से जे कहैत छी से ओ अखिमुन्नू जे 'बैसलि बिलारि कै तीनि बखरा' पबैत छथि से ?

बालकृष्ण– (**हँसि कै**) के हौ ! दिवान जी ?

नेबालाल– हँ हँ,

नाम जगतमनि आँखिक अन्धा !

बैसल पाबथि काज ने धन्धा !

बालकृष्ण– हौ बुड़िबक ! ओकरहि प्रसादैं सब कैं होइत छहु । नहि त ओकरा कलमक मारल कतेक जन बौआइत छथि !

चशमा चक्षु चढ़ौने बनल गम्हीर,
बैसथि प्रभुक समीपहि अतिशय धीर !
कोमल बचन उचारथि प्रभु रुचि पाय ।
निज इष्टक साधनमे रहु चित लाय ।।

नेबालाल– औ बालकृष्ण भाइ ! तखन त पित्ती भातिजमे बड़का लड़ाइ !

बालकृष्ण– (**हँसि कै**) आब सब तूल, हमरहि जैबाक देरि ।

नेबालाल– इहौ बूढ़ा आब कथी लै एतेक रेड़ि करैत छथि ! हुनकहु के छन्हि! धन सम्पत्ति ओकरे होएतैक । छाड़ि देथुन्हि । दूनू प्राणी काशी जाथु !

बालकृष्ण– हमर तोहर सन चण्डाल चौखड़ीक गुजर कोना होयतैक हौ !

नेबालाल– बुढ़बा कौड़िओ छदाम ककरहु कि दैत अछि । बबुआजीक होइतैक त परतारि सरतारि एक परतार खूब कमैतहुँ ।

बालकृष्ण– हौ बुड़िबक ! दूनू घर कैं नाश करी तखन ने बुधिआरी ! देखह ने, एही बेरि त बुढ़बेसँ हम रुपैया लैत छी (**कहैत क्रोधीक समीप जाइछ**) ।

क्रोधी– आबह आबह । देरि बड़ भेलहु !

बालकृष्ण– अबतहि छलहुँ कि भोलबा पहुँचल । कथि लै तलबी भेल ?

क्रोधी– आब हमरा दुनू गोटाकाँ समञ्जसक कोनो सम्भव नहि । हम कोन कोन यत्नसँ एतेक धनसंग्रह कैल से सब फुकनहि जाइत अछि । हँटल मानितहि नहि अछि । कहू त घरसँ बाहरधरि झगड़ा । त आब की करबाक चाही !

बालकृष्ण– करबाक विचार त अपन, परन्तु ई बुढ़ारी वयसक गञ्जन देखि हमरहु असह्य लगैत अछि ।

क्रोधी– तहिं बजौलिअहु । आब जखन ओ जहिना चलताह, हमहुँ तहिना चलबैन्हि !

बालकृष्ण– भला, सरकार पुरना लोक, पुरना बुद्धि । सरकारक पता ओ की पौताह ।

क्रोधी– समीपहि आबह (**सब एकट्ठा भै कनफुसकी करैत माँथ झुलाए आँखि चमकाए विचार करैत छथि । प्रकाश**) आब त दोसर उपाय नहि ।

बालकृष्ण– तखन सैह निश्चय रहै देल जाओ । दिवानजीसँ विचारि लेल जाओ ।

क्रोधी– दिवानजी कैं बजा त रौ ।

भोलबा– बेस सरकार । (**कहि जाइछ**) ।

[**भोलबाक सङ्ग दिवानजीक प्रवेश । सब एकट्ठा भै फेरि कनफुसकी करैत छथि**]

दिवानजी– नहि बुझैत छथि तखन सैह उचित ।

बालकृष्ण– तखन त नेबालाल कैं रातिए पठाऔल जाइन्हि सैह नीक !

क्रोधी– अवश्ये । (**दिवानजीसँ**) दिवानजी ! तावत् दूइ सै टाका नेबालाल कैं दिऔक ।

दिवानजी– बेस, जे हुकुम होइन्हि ।

बालकृष्ण– सरकार ! हमर इहो विचार होइछ जे तावत् हम ओम्हरुका दलमे मीलि जाइ । ओहू ठामक भेद त बुझैत रहबाक चाही ।

क्रोधी– बस, खूब बुद्धि बहार कैले । अवश्ये जो ! अवश्ये ! आब हम अपना प्रबन्ध में जाइत छी । तोहू सब जाह ।

बालकृष्ण– सरकार ! पश्चात् क्यौ हमर चुगली करै तखन त हम गेलहुँ किए त पैघ कैं काने होइत छन्हि ।

क्रोधी– नहि नहि, हमरा कतबौ क्यो कहताह तोहरामे अविश्वास नहिंए होएत । जाह जाह (**कहि जाइत छथि**)।

[**सभाभङ्ग होइछ । एक दिशसँ बालकृष्ण, नेबालाल ओ दिवानजी कनफुसकी करैत जाइत छथि**] ।

दिवानजी– बेस लिअ, एहिसँ सुतरबे करत । परन्तु मुट्ठी निकै गरमा लेब तखन देबन्हि (**कहि एक कागज ल**) एहिमे जें निकै परि लागै तँ औरहुक जुवान देने ऐबन्हि ।

बालकृष्ण– नेबालाल । तों डेराइत छलाह । सुतरल कि ने ?

नेबालाल– दोतरफा सुतरै तखन ने ।

बालकृष्ण– अरे ! दिवानजीक क्रिया रहल त अवश्ये सुतरत । भला, घर फुटौअलि यज्ञक दक्षिणा हमरा छाड़ि दोसर ककरा प्राप्त भै सकैत छन्हि ।

नेबालाल– से साँचे ।

बालकृष्णे– स, त आब दिवानजीक संग जाह, जे देथुन्हि से लै लिहह । हम आब ओम्हर जाइत छी ।

नेबालाल– कछु सुनू त (**कहि दूनू फराक भै कनफुसकी करैत छथि**) ।

बालकृष्ण– तकर उपाय हम कै लेब (**कहि सब जाइत छथि**) ।

[**परदा उठैत अछि एक फुलवाड़ीक बँगलामे एक युवक दूइ चारि दरबारीक संग बैसल दृष्ट होइत छथि**] ।

युवक– एखनधरि ओ ऐबो नहि कैल अछि ।

दरबारी 1– औ बबुआजी । तावत् किछु अनमना होइतैक से नीक छल ।

युवक– औ जी । एखन त राति दिन घरक झगड़ै मन झूर रहैत अछि, तखन कि अनमना नीक लगैत अछि !

दरबारी 2– भला, सरकारे थिकहुँ जे तैओ हँसी खुशीमे दिन बितबैत छी ।

युवक– बेस, कोन अनमना ?

दरबारी 2– सरकार ! किछु गाओल जाइत । बहुत दिन सुनना भेल ।

दरबारी 1– हँ हँ, से त साँचे ।

युवक– बेस, जखन सबहिक विचार त किछु होऔ (**कहि साज मंगाए गबैत छथि**) ।

[**एकदिशसँ नर्त्तकी अबैछ**]

दरबारी 1– बस, आ गई, तब तूही शुरू करो । (**युवकसँ**) बबुबाजी फाटक पर ककरहु जैबाक चाही जे ओम्हुरका क्यौ आबै नहि ।

बबुआजी– डरैं थरथर किऐक कपैत छी ? बुझबे करताह त की ? (**नर्त्तकीसँ**) खूब अच्छे अच्छे तर्ज का गाओ ।

[गान होइछ]

दरबारी 1– वाह वाह, क्या बात है (**बबुआजीसँ**) औ बाबू अछि धरि नीक ।

बबुआजी– अच्छा, एक और गाओ (**फेरि गान होइछ । गान समाप्त होइत बालकृष्णक प्रवेश । सब चुप्प**) ।

दरबारी 1– (**अपनहि अपन**) एही हेतु फाटक पर ककरहु पठाबै कहलैन्हि ।

युवक– (**क्रोधक आँखिए निवारण करैत छथि**) ।

बालकृष्ण– बबुआजी । सभा गुम्म किऐक भेल ? की नाच देखबाक हमरा आँखि नहि ? की सुनबाक कान नहि ? वा एहि आनन्दमे हमहि विघ्न उपस्थित भेलहुँ ।

दरबारी 1– नहि नहि । बबुआजीक सारकैं बालक भेल छथिन्हि । ओहि ठामसँ चीठी आएल छलन्हि जे एक नीक नर्त्तकीकैं ताकि पठाउ । तैं ई बजाउलि गेलि अछि ।

बालकृष्ण– अवश्ये, नीक ताकि कै पठाए दिऔन्हि । भला, बानगी हमहुँ त देखी ।

बबुआजी– बेस ने ।

दरबारी 1– तुम अपना काम शुरू करो ।

[**गान होइछ, गान समाप्त भेला पर**]

बबुआजी– बस, खतम करो और तुम अभी जाओ ।

[**सूनि नर्त्तकी चलै चाहैत अछि । एक दरबारी ओकरा संग किछु कथा करबाक नाट्य करैत जाए फिरि कै बैसैत छथि**]

युवक– बालकृष्ण, अहाँ कोना एम्हर ऐलहुँ ?

बालकृष्ण– कखनहु सरकारी काजैं, कखनहुँ अपने काजैं दरबार आबैक पड़ैछ ।

युवक– से त अवश्ये, परन्तु ककाजीक ओहिठामसँ एम्हर ऐबाक कोन प्रयोजन ?

बालकृष्ण– औ बाबू ! एखन त ककाजीसँ अहाँ भिन्नो नहि भेलहुँ अछि, तखन हमरहिसँ बटबारा आरम्भ किऐक भेलैक ?

युवक– (**हँसि कै**) नहि नहि, से किऐक होएतैक ।

बालकृष्ण– औ बाबूजी ! हम पूर्व अहींक बापक दरबारी छलहुँ, जाही तरहैं एखन (**दरबारी सबहिक दिशि देखाए**) ई सब अहाँक सङ्ग छथि; ताही तरहैं हमहुँ सङ्ग रहैत छलहुँ । मानितहुँ छलाह ओ । हुनके देल कतोक वस्तुओ अछि । परन्तु हुनका परोक्षैं ओ वस्तु सब देखि तेहन क्षोभ होइछ जे छुबितहु नहि छी (कहि शोक नाट्य) ।

युवक– आब त ककैजी छथि ।

बालकृष्ण– देखल ? ई फुटौअलि हमरहिसँ ? हम शपथ कै कहि सकैत छी जे बेरि पड़ने हम अपनेक हेतु प्राण दै देब, परन्तु हमरामे विश्वासो कैल जाए । सुनल अछि ने–

बिनु विश्वासक देव–अर्चना करइत की फल ।
बिनु विश्वासक वैद्य औषधी सौं हो की भल ।।
पहरू बिनु विश्वास राखि हो उर नित शङ्का ।
चित सचेत सब काल बजल जनु शत्रुक डङ्का ।।
काज कतहु सम्पन्न हो बिनु विश्वासक भृत्यसौं ।
हृदय आधि छूटै कतहु नर्त्तनर्त्तकीनृत्यसौं. ।।

औ बाबू ! हम सब विषय बुझैत छी । पूर्वसँ आइधरि कतोक युक्तिओ लगा रखने छी परन्तु अपने पुछितहि नहि छी । तखन देखैत देखैत अवसर पाबि उपस्थित भेलहुँ अछि ।

[युवक सूनि दरबारी सबहिक दिशि तकैत छथि]

युवक– हमरा त अहाँक विश्वास अवश्ये करबाक चाही, किऐक त बाबूजीक प्रतीती व्यक्ति थिकहुँ, परन्तु ।

बालकृष्ण– परन्तु तरन्तु किछु नहि, जँ सन्देह अछि तँ परीक्षो लै लिअ और कोन परीक्षा, (**हाथसँ एक कागज दै**) एहीसँ हमर सब परीक्षा भै जाएत ।

बबुआजी– (**कागज खोलि पढ़ि**) बस बस, एहि लै हम कतेक प्रयत्न करैत छलहुँ । एतेक त हमरा बुझलो नहि छल ।

बालकृष्ण– एतबै नहि,औरो ।

बबुआजी– से कोना पता लागत ।

बालकृष्ण– ई त अपनहिक जन्ममे अपनेक बाबूजी शालचद्दरि देने छलाह सैह दै लैलहुँ अछि ।

बबुआजी– कतबा दामक ओ शालचद्दरि छल ?

बालकृष्ण– हमर कोनो पुरुष किनने रहैत तखन ने, परन्तु ओकरे जोड़ा उजरा बूढ़ा बाबू कखनहु कखनहु औढ़ैत छथि ।

बबुआजी– हँ हँ, बेस, बुझल । पुरना काशमीरक । तखन त औरहुक युक्ति लगैबाक थिक ।

बालकृष्ण– हमरा त जे कही से करी । बूढ़ाकैं पता लगतन्हि तँ ओहो खरचा बन्द कै देताह ।

बबुआजी– अहाँ कैं आइसँ हम खरचा बहाल करैत छी, ओ बन्द करथु वा नहि ।

बालकृष्ण– **(चुप्प भै सुनैत छथि)**

बबुआजी– चुप्प किऐक भेलहुँ ?

बालकृष्ण– बड़ तारतम्यमे पड़लहुँ । बूढ़ा जँ ई सुनताह तँ अपना ओहि ठाम जाइए नहि देताह । तखन त अपनेक काज हमरासँ किछु नहि होएत ।

बबुआजी– से ओ सुनताह किऐक ? अहाँ कैं जे कहबाक हो से राति कै कहि जाएब, हम लोकमे अहाँक निन्दे बजैत रहब, खरचो भेटैत रहत ।

बालकृष्ण– बाह रे चतुरता ! बस, आब हमरहु निश्चय भेल जे अपने अपना काजमे खूब दक्ष छी ।

बिनु प्रपञ्च नहि सिद्ध हो जे इच्छित निज काज ।
भारत युद्धहुँ कैल से कृष्णचन्द्र महाराज ।।

बबुआजी– किऐक नहि ! अहाँक सन प्राचीन लोक क्यौ भेटितहि नहि छल । तखन हम की करू ।

बालकृष्ण– बस, आब त सब तूल, जे अभिलाषा हो से कहल जाओ ।

बबुआजी– अभिलाषा की रहत । हम त कैदी बनल छी । धनसम्पत्ति आब छुबै पबितहि नहि छी, नोकर चाकर अधीने नहि, तखन एना कतेक दिन चलत ?

बालकृष्ण– आब भला, अहाँ कें से वयस अछि जे खाइ, पड़ल रही ? आब तँ अपन जर–जमीन्दारी देखी से ने भेलहुँ ।

बबुआजी– ककाजीक जीबैत से कतै (**कहि उदासीनता देखबैत छथि**) ।

बालकृष्ण– बबुआजी ! चिन्ता करैत छी ? कोनो चिन्ता नहि । अहाँक सब अभिलाषा पूर्ण करबा लै हम तैआर छी । (**कहि समीप जाए कानमे किछु कहैत छथि**)।

बबुआजी– से तँ हमरहु सन्देह होइत छल । तकर यत्न करबाक चाही ।

बालकृष्ण– (**फेरि कानमे किछु कहि**) जँ विचार हो तँ एकर यत्न करी.।

बबुआजी– अवश्येक । आब की, जखन होएबे करत तखन 'शुभस्य शीघ्रम् ।'

बालकृष्ण– हमरो विचार सैह, परन्तु अपना दरबारी सबसँ विचारि लेल जाओ ।

बबुआजी– बिचारले अछि । भला, अहाँक कथाक ककरा नहि विचार होएतन्हि ।

बालकृष्ण– तखन जे आज्ञा हो ।

बबुआजी– एखन सब त नहि, एक सै धरि अवश्य ।

बालकृष्ण– तैं नहि क्षति, फेरि काजो करताह तखन ने ।

बबुआजी– (**दरबारीसँ**) एक गोटे हमर बकस लाउ ।

दरबारी 1– बेस सरकार ! (**कहि जाए बकस अनैत छथि**) ।

बबुआजी– (**बकस खोलि एक कागजसँ लपेटल कागजक बण्डिल दैत छथिन्हि । प्रकाश**) एहिमे दूइ सैक नोट अछि । एक सै शालचद्दरिक दाम ओ एक सै ओहि हेतु ।

बालकृष्ण– औ बाबू ! नोटपर अहाँक दसखत रहलासँ सब बात खुलि जाएत, बेदसखतीमे हम चोरे होएब ।

बबुआजी– नहि नहि, सब दशटकिए अछि, दसखतक कोनो प्रयोजन नहि !

बालकृष्ण– तखन बेस । आब हम चलैत छी (**कहि जाइत छथि । मनहि मन) बस, यात्रा खूब छल । दूनू दिशि बोहनी भेल, दूनू ठाम हाजरी, खरचा सेहो ।**

[एक दिशसँ नेबालाल अबैत छथि]

नेबालाल– भाइ ! सुतरलैक कि नहि ?

बालकृष्ण– अवश्येक !

नेबालाल– औ भाइ ! रुपैया त लेलैक परन्तु बड़ पैघ घर नाश होएतैक ।

बालकृष्ण– तों एखन सिखह, हम त कतेक घर कैं सोधि बैसलहुँ अछि । बुझल नहि छहु, 'तोहरा भोजमे वज्र पड़ौ, मोहि दूइ पूरीसँ काम ।' चलह चलह, एकर क्यौ कथा करै । (**कहैत जाइत छथि**)

बबुआजी– आब फेरि काल्हि आठ बजे रातिमे एहिठाम एकट्ठा होएब । ओहो औताह ।

दरबारी 1– आइ तँ खूब चिड़िआ बझल ।

बबुआजी– एही लै हम व्यग्र छलहुँ । आब देखू ने आइ काल्हिसँ फूट फूट तहसील कि एकदम बन्द ।

दरबारी 2– इः, से हो त हम ग्रामदेवता कैं छागर चढ़ाबी ।

दरबारी 1– हम त उत्सव पूर्वक पूजा करब ओ बूढ़हुकैं हकार देबैन्हि । मरकौर प्रसादो खोएबैन्हि (**कहि सब हँसैत छथि**) ।

दरबारी 2– सरकार ! नर्त्तकीकैं किछु निकासी होएतैक ?

बबुआजी– औ ! अहाँ जे अनने छलहुँ, ताहिमे जे छल से हुनका देलन्हि ? (दरबारी 1 **सँ**) अहाँ ओकरासँ बुझल ?

दरबारी 1– बुझल त, जबूर बड़ कहलक । १०) सैकड़ा गदियाना, २।।) सैकड़ा, सूद । सेहो तिनिएँ मासमे असल ।

दरबारी २– अवसर पड़ने की होऔ ।

बबुआजी– से त नीके कहैत छथि । जाउ, तात्काल दूइ हजार काल्हि ठीक कैने आएब ।

दरबारी 1– बेस, बूझि कै निवेदन करब ।

बबुआजी– बुझब की, काज कैनहि आएब । आब अधिक अबेरि भेल । हम जाइत छी (**कहि जाइत छथि**) ।

दरबारी 2– (**दरबारी 1सँ**) हौ ! ई बुढ़बा एक चिट्ट कागज दै दूइ सैक नोट लै चल गेल !

दरबारी 1– काजो तेहने करतैक !

दरबारी 2– अरे ! सब की खरचे करतैक । हमरहु लोकनि कैं किछु देब उचित छलैक कि ने !

दरबारी 1– एखन छाड़ि दिऔन्हि, परिकथु त !

[**नेपथ्यमे**]

लखु लखु मिथिला निज–सुत–काज ।
लोभविवश कुकरमरत निशि दिन कहितहुँ होइछ लाज ।।
पिशुन प्रपञ्ची सञ्चहि सञ्चरु के कहु कत कत व्याज !
धर्मक पथ बिसरल सब भै गेल किंकर कलि महाराज ।।
गौतम आदिक नाम नशाओल बनल कुटिल शिरताज ।
हौ की छल की भै गेल मैथिल नहि किछु फुरइछ आज ।।

दरबारी 1– औ जी ! के ई महामहोपाध्याय बनि ज्ञान छँटैत छथि ? चलू त सबहु एक बेरि हिनका देखू (**कहैत सबहु जाए चाहैत छथि**) ।

[परदा ख़सैत अछि]



पाँचम अङ्क

[स्थान कलिक निवासभवन]

कलि– (**स्वगत**) सैन्य सब काँ नियुक्त कैल । अपनहुँ गुप्तरूपैं ओकर क्रियाक निरीक्षण कै रहल छी । चारक द्वारा वार्त्ता प्राप्त भै रहल अछि, जाहिसँ अभीष्ट–सिद्धिक लक्षणो बुझना जाइछ, किऐक तँ लोभ, क्रोध, ईर्ष्या ओ अनाचार अपना चातुर्यसँ कार्यसाधन कै रहल अछि । आलस्य सबहु मैथिलकाँ उद्योगसँ दिनानुदिन स्थगित कैने जाइछ । औरो हमर सैन्य सब अपन–अपन कर्त्तव्यमे लागल अछि। परन्तु ओकर ओ कथा 'मिथिला–देश–मध्य की व्यापत क्रूर कलिक परभाव' स्वप्नहुँ मध्य तेहन ने क्रोधान्ध करैछ जे ओकरा नाशक हेतु सतत हृदय प्रज्वलिते रहैछ । किऐक त–

गौरव वचन शत्रु–सम्भाषित सुनि सुनि अपनहि कान ।
ककरा हृदयमध्य क्रोधानल दाहक असह समान ।।

एहिसँ ओतैक वार्त्ता बुझबाक हेतु कौतूहल बनले रहैछ ।

[एक दिशसँ एक व्यक्तिक प्रवेश]

व्यक्ति– धर्मपथनिवारक कुकर्मप्रचारक क्रोधादिसैन्यपरिमण्डित बकवादशास्त्र–पण्डित त्रैलोक्य–विजयी महाराजाधिराज कलि महाराजकाँ जय ।

कलि– के ई? दुर्मुख ! आबह आबह । हम तोहर प्रतीक्षे कै रहल छलहुँ; एही हेतु द्वारपालकाँ बुझाए देने छिऐक जे मिथिलाविजयी शूर वा ओहि ठामसँ आएल अपन भृत्य कैं रोकबाक प्रयोजन नहि ।

दुर्मुख– महाराज, हम एहिखन मिथिलासँ ऐलहुँ अछि ।

कलि– एखनहुँ धरि मिथिला अछिए, तखन आन विषय की पुछिअहु ।

धिक जीवन जे शत्रुगुन सुनइत रह निज कान ।
कै कहु अनल प्रवेश बरु भल थिक त्यागब प्रान ।।

(**क्रोधान्ध भै**) धिक्कार हमरा, धिक्कार हमरा क्रियाकुशलता कैं ओ धिक्कार हमरा सैन्यकैं जे एतेक उद्योग कैलहु पर मिथिलाक नाम छैके । की अनावृष्टिक प्रचण्ड मार्त्तण्डातपसँ भस्म नहि भेलि ? की अतिवृष्टिमे अनेकानेक विपथ–गामिनी नदीक प्रवाहमे निमग्ना नहि भेलि ? की बारंबार अकालक उत्कर्षतासँ प्रजाहीना नहि भेलि ? की ईर्ष्याक्रोधादिक कौशलसँ यदुवंशीक स्वरूपैं अपनहिमे लड़ि सब सन्तानक नाश नहि भेलैक ? अरे ! 'मिथिलादेश–मध्य की व्यापत क्रूर कलिक परभाव' ई कथा ओकर अक्षर अक्षर सत्य भेलैक ? (**चुप्प भै**)

की मुनिजन तपबल प्रबल की प्रपञ्च किछु आन ।
की सीता अवतार भुवि ! सहजहि हर मम मान ।।

(**चुप्प भै**) बेस, तखन एतेक सैन्य रखबाक कोन काज ।

दुर्मुख– महाराज ! पहिने हमर निवेदन सुनि लेल जाए, तखन उचित विचार कैल जाए ।

कलि– आब की कहबह । मैथिलक गुण सुनले बुझल अछि ।

दुर्मुख– महाराज ! से नहि ।

नामक मिथिला रहलि छथि भेल गौरवक अन्त ।
सफलमनोरथ सैन्य सब कै कहु कला अनन्त ।।

कलि– (**प्रसन्नतासँ**) बाह ! केहन शुभवार्त्ता ।

दुर्मुख– महाराज ! अपनेक सैन्य कैं ब्रह्माण्डो जीतब कौतूहल मात्र । ततै मिथिलाक कोन गणना ।

ब्रह्माण्डमे कतहु की छथि शूर वीर
जे देखि सैन्य कलिराज न हो अधीर ।
प्राविट् कुहू निशिथ घोरघटान्धकार,
वज्राहतैं पथिक त्राहि न के पुकार ।।

पुनः ।

जे सुर नर मुनि जीति कहु कर प्रभु पदमे लीन ।
की विलम्ब तनिका जितब मैथिल जन अति दीन ।।

कलि– से त सत्य; भला, कोना कोना विजय भेल से त कहह ।

दुर्मुख– महाराज ! अपनेक चतुर सैन्य सब वेष बदलि मैथिल सब कैं खूब भ्रममे आनि सर्वनाश कैलक ।

कलि– बाह बाह ! से कोना ?

दुर्मुख– सुनल जाओ ।

सन्तोषक छवि आलस लेल । सब जन तनिक वश्य भै गेल ।।
क्रोध धैल पुरुषार्थी रूप । प्रकट क्रिया कर तसु अनुरूप ।।
पिशुन तथ्यज्ञानी परमान । छल प्रपञ्च खल साधु समान ।।
ईर्ष्या वीर पुरुष छवि धारि प्रभुमत साधल युक्ति बिचारि ।।

कलि– बाह रे ! चतुर सैन्यगण ! अपन चातुरीक चमत्कार खूब देखौलक । तखन तखन ?

दुर्मुख– महाराज !

कहब–सुनब सौँ नीक थिक जे देखिअ निज नैन ।
शत्रुनाश दृग देखि कै हृदय पाब अति चैन ।।

कलि– कथा तोहरे नीक । तखन त चलबाक चाही (**कहैत गमन करैत छथि**) ।

[परदा उठैत अछि । टूटल फूटल घर दृष्ट होइछ । दुर्मुखक सङ्ग कलिक प्रवेश]

दुर्मुख– महाराज ! देखल जाओ मिथिलाक दुर्दशा ।

जे अटालिका गौरवसौं नभ चुम्बनहिक अभिमानी ।
से भूतल पड़ि प्रभुपदनत भै चाह क्षमा उर आनी ।।

कलि– हँ हँ, से अवश्य ।

दुर्मुख– महाराज ! एम्हर दृष्टि देल जाओ । ई जे देखल जाइछ बड़का बड़का अट्टालिका ढहल ढनमनाएल, से ईर्ष्याक चतुरतासँ ।

डाह लेल हियवास त्रास गुरुजनहुक छूटल ।
प्रीति भक्ति परचार हार मणिसन जनु टूटल ।।
तैं अवसर भल पाबि क्रोध ततछन संचरला ।
निज इच्छित फलहेतु, पिशुनवशमे से पड़ला ।।
भाय–भाय कैं के कहै पिता–पुत्र लड़ि कै गेला ।
गौरव देशक कुलक नाश प्रभुहिक आज्ञावश भेला ।।

कलि– बाह ईर्ष्या ! बाह ! सबसँ उत्तम साधन तोहरहिसँ भेल ।

दुर्मुख– महाराज ! ई देखल जाओ । ई आलस्यक प्रतापैं

आलस जाल पसारि कैल वश मैथिलजनकाँ ।
चलबो मानथि भार हँसथि श्रमरत लखि अनकाँ ।।
तैं छूटल व्यवसाय सकल सुखदायक जे नित ।
केवल तौनी तानि सुतबकैं मानथि अतिहित ।।
भूख–विकल रहि राति दिन उद्यम किछु नहिँए करथि ।
भाल लिखल ह्वैबे करत कहि सन्तोषी बनि रहथि ।।

कलि– किऐक नहि । आलस्यो त काजे कैलक जे मबकैं व्यवसायहीन कै क्षीण दशामे प्राप्त कै देलक ।

दुर्मुख– ई लोभक प्रताप देखल जाओ ।

लालचसँ ललचाय सबहु मिथ्यावश भेला ।
तैं नृप सौँ अतिनिन्द्य निरादर सहि घर गेला ।।
तैओ गौरव जाति–पातिहिक निशिदिन ठेसी ।
टुक–टुक तकितहि रहथि लुटै धन सब परदेशी ।।
भ्रमहुँ ने त्यागथि ताहिकाँ मानि इष्ट सेवा करथि ।
सहजहि क्षीण मलीन भै प्रभु अनुशासनवश पड़थि ।।

कलि– बाह रे लोभ ! अपनहुँ देशक आशासँ निरास कैलहुन्हि ।

दुर्मुख– महाराज ! एतबै नहि, ई थोड़ेक औरो प्रताप देखौलक ।

अन्य देशसौं आबि आबि जे दर्प देखाबथि ।
ताहूमे बहुतोक व्यक्ति लोभे अपनाबथि ।
हुनकहु देखि समृद्ध जीभ सौं जलकण टपकै ।
लोभमग्न धन प्रभुक पाबि अवसर नित लपकै ।
क्यौ अनदेशी नहि बँचल जे मिथिला आगत भेला ।
किछु दिन अन्तर पाबि कै सब लोभक वश भै गेला ।।

कलि– की ओकरहु सबकैं लोभ लपेटलक ? बाह बाह ! देखू त ।

दुर्मुख– महाराज ! ई अपनेहिक परम प्रिय अनाचाराचार्यक क्रियाक प्रभाव त देखल जाओ ।

बहुतो पूजा ध्यान पाठ सन्ध्याकाँ त्यागल ।
बिसरल व्रत उपवास क्षुधा चौगुन जनु जागल ।।
विधिविहीन कत काज करबकैं मुख्ये मानथि ।
श्रुतिवचनक जे अर्थ ताहि आने अनुमानथि ।।
भै गेल वादी त्यागि कै श्रद्धा ऋषि मुनि बैनमे ।
अनाचार आचार्य छवि पहु परिछाही नैनमे ।।

कलि– बाह रे अनाचाराचार्य ! अहाँ त हिनका सबहिक जड़िए काटल । (**दुर्मुखसँ**) आब हमारा निश्चय होइछ जे हमर प्रताप एहू ठाम पूर्ण रूपैं व्याप्त भेल ।

दुर्मुख– महाराज ! वैह देखल जाओ, सैनिकगण मिथिलाविजय कैने आनन्दमे मग्न एम्हर ओम्हर घुमैत एही दिशि चल अबैत अछि । तैं हमर प्रर्थना जे एकरा सबहिक आनन्दाभिनय गुप्त रहि देखल जाए ।

कलि– हँ हँ; ई तों नीक कहलह । (**कहि दूनू गोटै एक दिशि गुप्तरूपैँ ठाढ़ भै देखैत छथि**) ।

[एक दिशसँ लोभ गीत गबैत प्रवेश करैछ]

लोभ– हम जितलहुँ आए हम जितलहुँ आए। मैथिलगौरव देलहुँ नशाए ।।
परधन चारा देलहुँ देखाए। मिथिला मीनकैं लेलहु बझाए ।।
तेहन प्रीति हमरामे भेल । धर्म नीतिकैं तेजिए देल ।।
तेहन कैल हम जाल पसार। मिथिला लागल लोभ बजार ।।
जहिखन प्रभुक समिप हम जैब। मुँह माङल धन सहजहि पैब ।।

[गान समाप्त होइत होइत क्रोधक प्रवेश]

क्रोध– किछु सुनि ले बात किछु सुनि ले बात। मिथिलानाश हमर उतपात ।।
जौं मैथिल हिय हम ने समाइ। तौं सब जैतहुँ मुँह मसि लाइ ।।
जौं हम देखल आँखि उठाए। भक्ति ऐक्य सब गेलाह पड़ाए ।।
अपनहि अपन नाशमे लागि। घर घर फूकल कलहक आगि ।।
जौं नहि हमर होएत सतकार। तौं सब सैन्यक फोड़ब कपार ।।

[एकदिशसँ ईर्ष्याक प्रवेश]

ईर्ष्या– सुनि सुनि फटै अछि मम कान ।
करथि किछु करनी ने बाजथि, बात बाण–समान ।।
ऐंठि कै बजबाक बानी, अहँक सहलो ने जाए ।
एहि मिथिलामध्य कीदहुँ कैल अछि अहँ आए ।।
जौं ने हम हिय–बीच ककरहु आबि करितहुँ वास ।
तों अहाँक उदय कतै चित शान्त सौं अतित्रास ।।
जितल मिथिला एक हमहीं कही सत्ये बैन ।
भै गेला सब वश्य हमरे देखि नयनक सैन ।।

[एक दिशसँ पिशुनक प्रवेश]

पिशुन– सुनु किछु वचन बुद्धिनिधान ।
आबि मिथिला कैल की सब ताहि पर दिअ ध्यान ।।
करिअ सब अपने प्रशंसा कहिअ के थिक आन ।
होइत ककरहु शक्य किछु जौं हम ने फुकितहुँ कान ।।
मन्त्र हमरे जपथि मैथिल राखि प्रभु सन्मान ।
तैं सकल कलि सैन्यमे हम पिशुननाम प्रधान ।।
हमर यश तेजि प्रभुक लग जौं करब आन बखान ।
हमहुँ पाबि एकान्त प्रभुकाँ करब दोषे गान ।

[**एकदिशसँ अनाचारक प्रवेश**]

अनाचर– कहइत छी निज गुणगण अपनहि सुनिअ न किछु परबैन ।
साधन सकल भेल हमरहि सौँ देखल सब भरि नैन ।।
यज्ञ पाठ पूजा व्रत संयम श्रुति पुराणमे प्रीति ।
गुरु पितु मातु चरण सेवारत मिथिला घर घर रीति ।।
से सब आबि नशाओल हमहीं भेल कतेक मम दास ।
केवल हमर प्रपञ्चहि जानू पूरल सब जन आश ।।

क्रोध– हे हौ ! तों हमरा सबहिक पछुलगुआ भै टरटर करैत छह ? हमरा सबहि कैं चिन्हैत नहि छह ? हमरा लोकनि सादर प्रभुक पठाओल थिकहुँ ।

अनाचार– अहाँ सबहि त हुकुमतिऐँ ऐलहुँ अछि, हम जँ बिनु आज्ञहि काज साधन करी तँ हम पैघ की अहाँ, वा हम कोना ऐलहुँ से अहाँ की जनबैक ।

ईर्ष्या– येह की अलखक चान लोकलन्हि अछि ।

अनाचार– अहाँकैँ हमरा त ने झगड़ा होऐ ।

पिशुन– (**हँसिकै**) हँ हँ, बात नीक कहलिऐन्हि (**कहि हँसैत अछि**) ।

अनाचार– अहाँ बड़ दुष्ट बुझना जाइत छी औ ।

पिशुन– नहि नहि, के कहलक अछि ।

अनाचार– हमरा चिन्हैत नहि छी ?

श्रीमुख–कथित वेदमतमर्दक की थिक शास्त्र पुरान ।
प्रभुकाँ परिचित छी एक हमही अपर चिन्हत के आन ।।

कलि– कहैत छन्हि अनाचार नीक कथा ।

पिशुन– औ लोकनि ! हिनका चिन्हलिअन्हि ? (**कहि हँसैत छथि**) ।

अनाचार– बेस बेस, प्रभुक सभामे जखन पहुँचब तखन बुझब ओ हमरा चिन्हबो करब ।

पिशुन– हम त शपथ करैत छी , ओहि ठाम चुप्पे रहब ।

दुर्मुख– (**कलिसँ**) महाराज ! आब ई सब विजयक आनन्दमे तेहन मग्न भेल अछि जे अपनामे मारि करत ।

कलि– हमरा इहो दृश्य नीके लगैत अछि ।

दुर्मुख– (**स्वगत**) हँ, 'कलिस्तु कलहप्रियः' । (**प्रकाश**) से त अवश्य परन्तु (**एतबै कहलापर**) ।

[**नेपथ्यमे**]

धर्म धुरन्धर धीर वीरगण जन्म त लेलहुँ ।
पालि अपन कर्त्तव्य हाय हमरा तजि गेलहुँ ।।
जे सम्प्रति छथि तनिक कहल जाइछ नहि करनी ।
बिसरि नीतिपथगमन, भार भारी देल धरनी ।।
तनिक नीच करतूति सौं, सब खन हम विकले रही ।।
पुत्रप्रेम वश राति दिन, कतेक दुःख दारुण सही ।।

कलि– कें ई बाजल ?

पिशुन– औ बाँहि पुजौनिहार लोकनि ! किछु सुनलिऐक ?

ईर्ष्या– हँ हँ, सुनलैक । बेटाक दुःखै माइक रोदन । तैं की ।

पिशुन– ई वैह बुढ़िया थिकि, जकरा दोआरैं सबहुँ अकच्छ छी ।

अनाचार– ई बुढ़िया एहिना रने बने कनैत फिरैत छैक। की करबैक।

[नेपथ्यमे]

हमरा तेजि सब गेलहुँ कतै ।
अहँ सब बिनु कत कत दुख दारुन,
निशी वासर हम सहिअ एतै ।
जे छथि से न सुनथि श्रुतिबानी,
चलइत छथि बहु अनिति मतै ।।
श्रुतिपथ निदरि करथि अति कुकरम,
हारल हँटि हम निज प्रभुतै ।
श्रुतिरव यज्ञ–धूम परिपूरित,
चहु दिशि अहँ सब कैल जतै ।।
हाहाकार कलह कोलाहल,
कटुबानी सुनि पड़य ततै ।।

पिशुन– औ बाबू ! हम पड़ाइत छी। एकरा आगू हमर यत्न व्यर्थे होएत (**कहि गमन**)।

क्रोध– बेस,हम एक बेरि जाए देखैत छिऐन्हि (**कहि जाइत छथि**)।

लोभ– आब एहि ठाम की किछु परि लागत ? तखन घसकिए जाइ सैह नीक **(कहि जाइत छथि**)।

ईर्ष्या– हमरहिसँ लगतिहि त बुझतिहि। एक बेरि ओकरा हम त देखू (**कहि जाइछ**)।

आलस्य– (**एक दिशसँ सुस्तैं आबि**) एतेक काल सबहु फचफच करैत छलहुँ अछि, आब सटकलहुँ ? एखन जँ महाराज कलिराज एहि ठाम रहितथि त सबकैं इनामे दितथि। हमहुँ ? त बाबू हठैं नहिँ जैबैन्हि, बुढ़िए अबैत छथि त आबथु। हमहुँ अन्हरकी कोठलीमे नुकाए रहबैन्हि (**कहि जाइछ**)।

कालि– दुर्मुख ! तों हमरा येह सब देखैबा लै लैलाह ? ई सब सैन्य एतेक दिनसँ कोन काज कैलक ? जखन काजे ने कैलक तखन ओकर प्रयोजन की ? (**चुप्प भै**) देखू त ओ के छलि, ओकरसन शब्द सुनितहि डरैं वञ्चना कै कै सब पड़ाए गेल, इहो त आलस्यहिक ढाढ़स जे एसकरो नुकाय छपाए कै रहबहुक साहस कैलक अछि।

दुर्मुख– महाराज ! मिथिला यद्यपि पुत्रक कुचालिएँ शोकाकुल भै गेलि अछि तथापि ओकर पुण्यक प्रभावैं ओकरा ओतै प्राबल्य नहि भै सकैछ।

कलि– बेस बेस, बुझल बुझल। चलह चलह, तखन सब सेनाकैं दण्डे देब उचित। से स्वस्थानहि जाए करब (**कहि गमन–नाट्य**)।

[परदा खसैत अछि]



षष्ठ अङ्क

[नेपथ्यमे गान]

हाय ! कहब ककरा दुख जाए ।
कीदहुँ छलहुँ भेलहुँ अछि कीदहुँ, बितइछ दिन पछताए ।।
सुपुत सुयश धन सौं परिपूरित जग निज नाम–धराए ।
विधिवश ताहि क्षीण भै रहलहुँ, सब किछु गेल नशाए ।।
धर्मधुरन्धर वीर तनय जत, सबहुँ गेला तजि हाए ।
जे छथि से किछु नीति सुनथि नहि, सूतल छथि अलसाए ।।
थिकहुँ हमहि जग के नहि जानै, आदि प्रकृतिहुक माए ।
करुणा–सिन्धु उदार दयानिधि, जनिका राम जमाए ।।

[गान समाप्त होइत अतिक्षीण मिथिलाक प्रवेश]

मिथिला– हाय ! हमर दिन विधाता केहन कैलन्हि ! की छलहुँ ! की भेलहुँ ! एक दिन संसारमे हमर सन्तानक विद्या, बुद्धि, धन ओ कीर्त्ति एहि सबहिक चर्चा कतै नहि होइत छल ! चर्चाक कोन कथा; देश विदेशक लोक सब देखि देखि सिहैतहि छलाह । आब त आनक आने भै गेल ! कतै ओ धन, कतै औ धर्म, कतै ओ विद्या, कतै ओ नीति, कतै ओ सामञ्जस्य, कतै ओ धैर्य, कतै ओ उत्साह, कतै ओ विवेक ! आब त निर्लज्जता, निर्दयता, निरुत्साहता, लोलुपता; कपटता, वञ्चकता, एही सबहिक प्रचार देखि पड़ैत अछि । जे छथि ओ ताहीमे मग्न छथि, जाहिसँ और दिन दिन दुःख बढ़ैत अछि । हा ! एखन गौतम, याज्ञवल्क्य, शातानन्द, मण्डन, उदयनाचार्य, वर्द्धमान, वाचस्पति, पक्षधर प्रभृतिक सन योग्य नहि रहने हुनका सबहिक स्मरणसँ जे दुःख होइछ से के बुझत । (**चुप्प भै**) हमरा एहि दुर्दशाक शोक पहिनहिसँ होइत छल परन्तु ओहने ओहने सुसन्तानक भरोसैं वा आशासँ एतबा दिन निबहल । आब एहि दुष्टक डरैं की करू एहि सबक रक्षा कोना हो एतैक, किछु बुझिए ने पड़ैत अछि । छोड़िओ

नहि होइत अछि। भला, एहन माए के होइतिहि जे बौको–बताह सन्तानमे मात्सर्य नहि होयेतन्हि वा हुनक नीकक यत्न नहि करतिहि। हमर सन्तान त दुष्ट कलिक प्रपञ्चसँ कुबाटैं कुचालि चलि रहल छथि, जाहि द्वारा सुमति त्यागल, विद्या विमुखी भेलिहि, ऐक्य पड़ैलाह; और कतेक कहू, हित एको नहि रहलन्हि, जाहिसँ ई दुर्दशा देखि मन झूर रहैत अछि। (**चुप्प भै**) की करू ? ओ सब त कलिक प्रेरित अज्ञानक वशैं जे करैत छथि से नीके लगैत छन्हि, परन्तु माए कैं त सबसँ अधिक सन्तानक रक्षा करबाक भार छैक जे अबोध नेना कैं आगि छुइबसँ बरजब, आँकड़–पाथर खाएबसँ हँटब, पानिसँ डेराएब, विपथ जाइत पकड़ि लाएब माए अपन मुख्य काज मानि आइलि अछि। तैं हमहुँ एहनो दुर्दशासँ एहि बुढ़ारीमे हुनका सबहि लै बेहाले रहैत छी। (**चुप्प भै**) की करू ? आब त हँटब, डाँटब, बुझाएब, फुसिआएब, सबसँ थकलहुँ। किछु नहि भेल। होएत की, ओ सब त तेहनाक प्रपञ्चमे पड़ल छथि जे हमरा कथैं कतहुँ काज होऐ। आब दैबहिक भरोस। हे भगवान्! हमरा दोषैं वा अपने कोनो पापैं हमर सन्तानक ई बुद्धि तथा दुर्दिनता भैलन्हि त ई दोष क्षमा कै हुनका सबकैं नीतिक बाट चलबाक मति दिऔन्हि। दोहाइ भगवानक! दोहाइ दीनानाथक! दोहाइ पतितपावन अशरण–शरणक! हमर एहि विनय पर अवश्य कृपादृष्टि करू। (**चुप्प भै**) हम वैह थिकहुँ जे एहन दुःखक अवसर नहि होइत त हमरा मुहँक कथा अहाँ नहि सुनि पवितहुँ। हा! आइ हमर दिन एहन भेल जे जनिकहुसँ नहि बजबाक तनिकहु ओतै विलाप करैत छी। (**मुँह झाँपि कनैत छथि**) अरे! व्याकुल भेने विचारो नहि रहल! हिनका की कहलैन्हि ? भला, ओ कतहु उत्तर देथि। बेस, आब हुँनकहि कहैत छिऐन्हि ओ अवश्य सुनतिहि। संसारमे के एहन स्त्री होइतिहि जे नैहरकैं बिसरतिहिं; विशेष एहन समयमे। (**चुप्प भै**) सीते! ई अहाँक नैहरक लोक थिक। एक बेरि एकर दशा त देखू। ओ बड़का–बड़का कोठा अटारी सब की भेल! फुलबाड़ी कतै गेल! ओ पण्डित सब कतै गेलाह! ओ धनवान सब की भेलाह! ओ चतुर सब कहाँ अछि! ओ कलाकुशल सब कहाँ गेल! आब जेम्हरहि देखब तेम्हरहि भयंकर बुझना जाएत। मनुष्य जे देखब से लोभैं भरल! क्रोधैं जरल! ईर्ष्या सँ फूलल! आलस्य मे पड़ल! कहू त, एहनो

अवस्थामे एहि सबहिक दिशि नहि तकबैक त एकरा सबहिक कौन उपाय ? एकरा सबहिक संग त हमरो नाश भै जाएत। जैओ अहाँ जगज्जननी थिकहुँ परन्तु हमरा त अपनो जननीक प्रतिष्ठा देने छी, ताहू विचारैं हमर रक्षाक मूल एहि सबहिक रक्षाक क्रिया करिऔक। (**चुप्प भै**) एहन विपत्तिमे की करू ? (**चुप्प भै**) हाय !

अहँ तजि ककरा विनय सुनाउ ।
ककरा एहन प्रेम एहि दिशि जे, तनिक शरण हम जाउ ।।
कहब कतेक जनितहि देखितहि छी दीन दशा चित लाउ ।
दुखित जानि कै देखि दया दृग, आबहु तौं अपनाउ ।।
नैहर–नेह स्वभाविक तियकाँ किय तकरा बिसराउ ।
ह्वैत प्रलय छन भरि अनठौने जनु पाछाँ पछताउ ।।

[**गबैत गबैत मूर्छिता होइत छथि। आकाश मार्गे गान करैत श्रीसीताक आविर्भाव**]

धरु धरु धैरज जननी मोर ।
सुनितहि श्रुति हम ऐलहुँ हरब सकल दुख तोर ।।
जकर सुयश धन धर्मक गौरव तीनि भुवन छल सोर ।
सैह हमर नैहर की भै गेल, धन जन सुखहुक ओर ।।
अवश हरब दुख थापब सब सुख दै कलि दण्ड कठोर ।
जननी जन्मभूमिसौं बढ़ि के पालित जकरा कोर ।।

श्रीसीता–वास्तवमे, देखू त हमर नैहर की छल की भेल ! केवल एहि स्वरूपहिक देखने ककरा दया नहि होएतैक ? हमर त नैहरै थिक। अहा ! देखू त मायक दशा ! केहन दीनावस्थामे मूर्च्छिता पड़लि छथि। मा ! आब अहाँ चिन्ता जनु करी, अहाँ कैं आब कोनो दुःख नहि रहत। की कहल ? हमरा बिसरि देल ? नहि नहि, एहनि स्त्री के होइति जे माए ओ नैहर कैं बिसरति। देखू, एहि देशक राजाक प्रति हमर कृपा सर्वदा बनले रहैत अछि परन्तु संसारी कैं सुख दुःखक भोग्यक अवसर पाबि भेनहि, तैं आब हमरा प्रेरणासँ राजा ओ प्रजापर्यन्तक चित्तमे तेहन प्रभाव पड़तन्हि जे लोभक्रोधादिक भ्रमसँ छूटि सबहु एक मतै

उन्नतिपथारूढ़ होएताह; जाहिसँ अहाँक सब मनोरथ पूर्ण होएत। ई कथा हमर सत्य मानू। की कहल ? फेरि बिसरी जनु ? कदापि नहि। अहाँक ओ अहाँक सन्तानक रक्षामे हम मन देने रहब। अहाँक कथाक पालनो करैत रहब।

मिथिला–मैथिलरक्षिणि हमहीं जगभरि के नहि जान।
सहजहि सबहुँ उपासक हमरहि इष्टदेव कै मान ॥
पालब सतत अबश हम दृढ़ भै कहइत छी निजबानी।
सतत सिनेह रहै अछि बनले निज नैहर मनमानी ॥

[कहैत कहैत अन्तर्हिता होइत छथि]

मिथिला– [अकचकाइत उठि, चारू दिशि ताकि] जे हमरा ओ मधुर–मधुर कथा कहै छलिहि से कतै गेलिहि ? छलिहि त सीतै। एतबहु दिनपर देखल त वैह रूप। फेरि गेलिहि कतैं ? की उजड़ल–उपटल नैहर नहि सोहैलन्हि ? तैँहि त हम विनय कैलिएन्हि जे एक बेरि एकर दशा त देखथु। अरे ! ओ की कहैत छलिहि हमरा धैर्य दैत छलिहि, ओही संग हमरा सन्तानहुक रक्षाक वचन दैत छलिहि ? किऐक नहि, हुनका नहि ई दया होएतैन्हि त होएतैक ककरा ? ओ और की कहैत छलिहि ? अहाँक वचनक हम पालन करब। सहो उचिते। बेस, आब चित्तमे किछु भरोस भेल। परन्तु कतेक कालसँ हिनका सब कैं नहि देखलन्हि अछि तैं अधिक मन लागल अछि। एक बेरि देखी त जे आबहु हिनका सबहिक की अवस्था छन्हि। (कहैत जाइत छथि)।

[परदा उठैत अछि। कतेक मैथिल निद्राग्रस्त दृष्ट होइत छथि।

मिथिलाक प्रवेश।]

मिथिला– देखू त ? एखनहुधरि सुतले छथि ?

मोदसहित मिहिरोदय भै गेल चहु दिशि चारु प्रकाश।
तैओ अहाँ सबहि सुतले छी जैं हम रही उदास ॥
आबहु उठू करू दृग सिञ्चन, ओम्हर देखु एक बेरि।
तहि खन बूझि पड़त सब जन काँ भै गेल कतेक अबेरि ॥

[एक व्यक्ति आँखि मिड़ैत उठैत छथि।]

व्यक्ति– (**स्वगत**) ह, ई हाय हाय पछबा बसात कथी लै निन्द होबै देत । परन्तु जैओ निन्द टूटल छल तैओ पड़ले नीक लगैत छल । क्यौ 'मोदसहित' इत्यादि पढ़ि ई बरबराइत गेलि अछि । से सुनि ओकरहि पर तमसाय कै उठलहुँ । ओ त कहाँदन गेलि, परन्तु सुतल–सुतल अबेरि त अवश्ये भेल । (**सुतनिहार सबकैं देखि**) देखू त, ई एकौ गाटै त उठबो नहि कैलाह अछि । (**एक व्यक्ति देह सुगबुगबैत**) ह; पछबा बसात त अकच्छ कैलक । सुतहु नहि दैत अछि ।

पहिल व्यक्ति– औ संगी ! अरे कतेक अबेरि भेल । दुर जी ! आब जनु सूती । (**कहि दोपटा खैंचैत छथि** ।)

दोसर व्यक्ति– (**हड़बड़ाएल उठि चारू दिशि ताकि**) औ जी ! अबेरि त अवश्ये भेल । ई सब त सुतले छथि । हमहिं–अहाँ की करब ?

पहिल व्यक्ति– जेना–तेना हिनका सबहिकैं उठैबाक यत्न करू ।

[**दुनू गौटै सबकैं उठबैत छथि** ।]

पहिल व्यक्ति– (**एक सुतनिहारक देह डोलाए**) औ, उठू औ ।

सुतनिहार– उठेत छी, उठैत छी, थम्हू थम्हू, (**कहि करौट फेरैत छथि**)

दोसर व्यक्ति– (**दोसर सुतनिहारकैं**) औ बाबू ! उठू उठू ।

सुतनिहार– ओह ! छोड़ि दिअ । भने सुतल छी ।

पहिल व्यक्ति– (**तेसर सुतनिहारकैं**) औ जी ! अबेरि भेल । उठू उठू । आब जनु सूती ।

सुतनिहार– अरे ! जाउ जाउ ! बिहनसरेधरि कार कौआ जकाँ कर कर करैत छथि।

पहिल व्यक्ति– (**चारिम सुतनिहारकैं**) औ ! उठू औ ! बिहनसरुक सूतब शास्त्रमे निषेध छैक ।

सुतनिहार – हँ हँ ! सुतलकैं उठाएबो विधि ? शास्त्रमे यैह पढ़लन्हि ?

पहिल व्यक्ति– (**एक सुतनिहारकैं**) नेहौरा करैत छी, आबहु उठू । बड़ अबेरि भेल ।

सुतनिहार– की करबैक तावत् हमरा सुतले रहै दिअ, सब उठताह तखन ने ।

[**दुनू गोटै सबकैं घिसिआय–घिसिआय उठबैत छथि**]

□

जागृति–गीत

[मिथिला–मोदसँ उद्धृत]

उठू हा ! आँखि खोलू औ ! कहू श्रीमैथिली माता ।
अहा ! ई आसुरी औंही पड़ैली आँखि ताकू औ !
सुनू हे ! मैथिलीए धै कहू श्रीमैथिली माता ।।
विजाती हींहिं बानी जा इ धैने किच्छुओ बाजब ।
कहू मैं हम कहू हूँ छी ! गहू श्रीमैथिली माता ।।
बुझू होता होइत जौं आइ गाता सामहीनो जन ।
ततै हा ! याविनी ई की समैली मैथिली माता ।।
जतै योगी तथा भोगी निरोगी देशमे भेला ।
सदेहो भै विदेहे ? ऐं ! रटू श्रीमैथिली माता ।।
मैथिल, पड़ले रहब ? दिन दिन परजन–धूसबे सहब ।।

घर घर बर बर फूसिए बाजब । सतत परक भल देखिए जरब ।।
अपन ताकब नँहि दोषटा कहब । परहिक देखि गुन सुखिए मरब ।।
छन–सुख हेतु परयुवती लहब । नहि त्रिभुवन पति–गेहिनी गहब ।।
बड़ पद पाबि बहु संपति देखब । अपन जतेक अछि ओतबै भोगब ।।
देश–वेष राखि भाषा अपन भाखब । तखनहि देश लोक उन्नति चाखब ।।
थिकहुँ मैथिलमोद–कोल्हुए बहब । जय मिथिलेश कहि सुखसौँ रहब ।।

उठू ! उठू ! जागू मैथिल, उठू ! उठू ! जागू ।
कतेक सुतब कनेक ताकू अङ्ग बङ्ग आगू ।
योग याग जप त किछु ने अहाँक लागू ।।

जतए केहेंन केहेंन पण्डित दर्शनविद्या पागू ।
ततए सतत लोक सबहि सतत गाबथि फागू ।।
जतए मुदित नाची नाची देबी कहल माँगू ।
ततए संप्रति आलस मारल नृपति कहथि भागू ।।
पण्डितमण्डल शोभित नृपति की की विषय तागू ।
आलस छाड़ू ! आँखि खोलू अपन उद्योग लागू ।।

पहिल सुतनिहार – आब अहाँ अकच्छ कैल, परन्तु निन्दो टूटल (**कहि उठैत छथि**)।

पहिल व्यक्ति – क्यौ वृद्धा स्त्री एम्हरहि दै ई कहैत गेलि जे ('**मोदसहित' इत्यादि पढ़ैत छथि**)।

दोसर व्यक्ति– 'तैओ अहाँ सबहि सुतले छी तैँ हम रही उदास' (**पढ़ि चुप्प भै**) एहीसँ त बूझि पड़ैछ जे ओ सैह क्यौ थिकि, जकरा हमरा सबहिक अधिक मात्सर्य छैक ।

पहिल व्यक्ति – मायसँ भिन्न एहन मात्सर्य ककरा ।

दोसर व्यक्ति– (**सुतनिहारकैं**) बूझि त पड़ैछ सैह परन्तु आब ओ भेटतिहि कतै ? तैओ, चलू, तकिऔन्हि ?

पहिल व्यक्ति– औ जी ! तकबैन्हि कतै ? करुणास्वरैँ स्मरण करिऔन्हि अवश्ये औतिहि ।

दोसर व्यक्ति– हँ, नीक कहल ।

[सब अञ्जलिबद्ध भै गबैत छथि]

सुनु सुनु अम्ब विनय किछु मन दै बिसरि तनय अपराध ।
कतय शुभक आशा हिय अन्तर अहँक विमुख पल आध ।।
सहज स्वभावहि निज सुत रक्षिणि जननी जगभरि जान ।
कुकरम कोटि निरत सुतहुक प्रति नहिँ हो हृदय पखान ।।

हम कुकरम रत अनुपद अनुमत जानि हृदय निजमाय ।
आश धरिय हिय विपति समयमहँ होएब मोहि सहाय ।।स
अति दुरगति सौं धैल शरण हम नहिँ किछु आन उपाय ।
करिअ दया करुणामयि सुत प्रति रघुनन्दन कहु गाय ।।

[एक दिशसँ दिव्य वेषमे प्रसन्ना मिथिलाक प्रवेश]

मैथिल– अम्ब–चरण अवलम्ब एक अबुध तनयकाँ नित्य ।
ताहि दरससौं प्रमुद मन मानअि निज कृतकृत्य ।।

[कहि प्रणाम करैत छथि]

मिथिला– सीता सीतल नयनसौं देखथु सहित सिनेह ।
पूरथु सब मन–कामना शुभ आशिष मोर येह ।।

मैथिल– अम्ब ! हमरा सबहि अपनहिं कुकर्मैं अपन दशा तेहन कैल जे देखि देखि अपनहि पश्चात्ताप होइछ, परन्तु ओहिसँ उद्धार कैनिहारि अहाँ सँ भिन्न क्यौ दृष्टिगोचर नहि ँ होइछ । तैं हे अम्ब ! हे मा ! हे करुणामयि ! आब एहि अयोग्य सन्तानक कल्याणार्थ क्रिया करू (**कहि पैरपर खसैत छथि**) ।

मिथिला– (**हाथसँ उठबैत**) अरे ! सबहु उठू उठू, आब अहाँ सबहिकाँ मङ्गले मङ्गल अछि । हम अहाँ सबहिक कल्याणक हेतु जगज्जननी श्री सीताक विनय कै शुभ होएबाक वरदान लेल अछि । एखन अहाँ सबहुकाँ की इच्छा अछि से त कहू ।

मैथिली– मा और की रहत ?
राजभक्ति हृदि अचल सदाचारहि चित लागै ।
विद्या विविध प्रचार दोष सामाजिक त्यागै ।।
कृषि–वाणिज्योत्साह उचित व्यय सब काँ भावै ।
वृथा विरोधक नाश देखिसभ हिय हरषावै ।।
इतिहासक सङ्कलनसौं विबुध देशसेवा करथि ।।
नृपति धनीकैं कहु कृपा योग्य स्वदेशी आदरथि ।

मिथिला– श्रीसीताक कृपासँ अहाँ सबहिकाँ ई सब अभिलाषा सिद्ध होएत; तथापि एहूसँ विशेष जँ किछु इच्छा हो तँ कहू ।

मैथिल– अम्ब । एहिसँ विशेष की होएत ? तथापि जँ अहाँक एहन अनुग्रह जँ अछि त इहो अवश्य होऔ ।

नृपति सुयश सुत–वित–युत देशक नीति सुपथ चित आनथु ।
मैथिल–प्रजा प्रजासम देखथु ई आवश्यक मानथु ।।
बरिसै मेघ शस्य परिपूरै दुरित दूर भै भागौ ।
सबहिक मन महँ अचल भावसौँ धर्म कर्म रुचि जागौ ।।

मिथिला– अस्तु: त इहो होएत ।

[कहैत यवनिका पतन]

इति श्रीमैथिल–करणकायस्थ–श्रीरघुनन्दनदासरचित

मिथिला–नाटक समाप्त ।

